09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 105

ऊँची जातियों की गुत्थी

भाजपा से कांग्रेस, फिर वापसी

विभा अत्री और नितिन मेहता

अनुवाद : अरुण कुमार त्रिपाठी

राजनीति में जातियों की भूमिका सदैव महत्त्वपूर्ण रही है। एक मजबूत लोकतंत्र में जातियाँ सामाजिक और राजनीतिक आयामों को एकमेक करने का ज़रिया बन जाती है। भारत में जाति आधारित पार्टियों का गठन जातियों की इसी भूमिका का ही परिणाम है। विभिन्न राजनीतिक दलों के भीतर राजनीतिक नेतृत्व निश्चित जाति समूहों के कारण उभरता और टिकता है। इसलिए जो लोग भारतीय राजनीति में जातियों की उपस्थिति से इनकार करते हैं वे विस्मृति की अवस्था में जी रहे होते हैं। आदिवासी, दलित, मुस्लिम और अन्य पिछड़े वर्ग जैसी विभिन्न जातियों और समुदायों की राजनीतिक भागीदारी पर काफ़ी समाज-वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि जब ऊँची जातियों पर अध्ययनों की तलाश होती है तो बहुत कम ही साहित्य मिलता है। जो भी अध्ययन उपलब्ध हैं, वे भी कुछ राज्यों में ऊँची जातियों पर केंद्रित हैं लेकिन अभी तक ऐसा अध्ययन नहीं हुआ है जो ऊँची जातियों की चुनावी भागीदारी और प्राथमिकताओं पर केंद्रित हो। यह शोध-पत्र यह जानने का ईमानदार प्रयास है कि तमाम मौक़ों पर इन जातियों-समूहों की राजनीतिक भागीदारी के रुझान क्या रहे हैं।

राजनीतिक भागीदारी का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम मतदान की संख्या है। अगर हम 2009 के लोकसभा चुनाव पर निगाह डालें तो पाएँगे कि इस चुनाव में 58.8 प्रतिशत वोट पड़े थे। यह मतदान

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 106

2004 के लोकसभा चुनाव से काफ़ी अलग था। 2009 में ऊँची जातियों का राष्ट्रीय मतदान औसत 58 प्रतिशत इन चुनावों में हुए कुल मतदान के लगभग बराबर ही था। दरअसल, ऊँची जातियों के मतदान का प्रतिशत सदैव राष्ट्रीय औसत के या तो बराबर रहा है या उससे ज़्यादा। सिर्फ़ 1998 का लोकसभा चुनाव इसका अपवाद रहा है जहाँ पर राष्ट्रीय मतदान के मुक़ाबले ऊँची जातियों का मतदान कम रहा है। संजय कुमार ने अपने अध्ययन में मतदान के अलावा रैलियों और सभाओं वगैरह के ज़रिये विभिन्न जातियों की चुनावी भागीदारी की चर्चा की है।

राज्यों के रुझान

तालिका-2 लोकसभा के 2009 में हुए चुनाव में विभिन्न राज्यों में ऊँची जातियों के मतदान प्रतिशत

तालिका-1

ऊँची जातियों का मतदान लोकसभा चुनाव (1996-2009)

सामाजिक समुदाय	लोकसभा 1971	लोकसभा 1996	लोकसभा 1998	लोकसभा 1999	लोकसभा 2004	लोकसभा 2009
सभी	53.3	58.0	62.1	60.0	58.1	58.5
ऊँची जाति	53	60	59	65	60	58

नोट : सभी अंक प्रतिशत में. चूँकि चुनाव आयोग समुदाय के लिहाज़ से मतदान के आँकड़े इकट्ठा नहीं करता इसलिए यह संख्या मतदाताओं के अपने बयानों पर आधारित है. जिन मतदाताओं ने यह कहा कि उन्होंने वोट दिया है लेकिन उनकी उँगली पर स्याही के निशान नहीं थे उनके लिए यह माना गया कि उन्होंने मतदान नहीं किया है. जिन्हें मतदान करने वाला माना गया उनकी संख्या का कुल वास्तविक मतदान से मिलान भी किया गया. **स्रोत :** सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश, राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस) 71, (सैम्पल आकार 668), (एनईएस) 96, (सैम्पल आकार 1638), राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस) 04 (सैम्पल आकार 3918), राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस) 09 (सैम्पल आकार 6267)। ऊपर जो सैम्पल आकार दिये गये हैं वे ऊँची जातियों के हैं।

की जानकारी देती है। ऊँची जातियों के मतदान में किसी प्रकार की सुनिश्चित प्रवृत्ति नहीं दिखाई पड़ती न ही वह सभी राज्यों में एक समान है। कुछ ऐसे राज्य हैं जहाँ पर ऊँची जातियों के मतदान का प्रतिशत राज्यों के औसत मतदान के बराबर ही था। कुछ राज्यों में यह ज़्यादा था जबकि अन्य राज्यों में कुल मतदान से कम था। भारत के दो राज्य ऐसे थे जहाँ ऊँची जातियों और राज्य का मतदान लगभग बराबर रहा। यह राज्य बिहार और हरियाणा थे। पश्चिम बंगाल में कुल मतदान सबसे ज़्यादा 81 प्रतिशत रहा और ऊँची जातियों के 78 प्रतिशत वोट पड़े जो कि सभी राज्यों में सर्वाधिक थे।

ऊँची जातियाँ : बतौर वोट बैंक

तालिका-3 पिछले दो दशकों में कांग्रेस और भाजपा जैसी मुख्य पार्टियों के लिए ऊँची जातियों की वोट देने की प्रवृत्ति दर्शाती है। हम देखते हैं कि 1998 के चुनावों से ऊँची जातियाँ कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा संख्या में वोट देती रही हैं। 2004 में कांग्रेस और भाजपा के लिए ऊँची जातियों के वोटों में 12 प्रतिशत का अंतर रहा और भाजपा की वह बढ़त अभी भी बनी हुई है। लेकिन 2009 में यह अंतर घटकर 3 प्रतिशत रह गया। ऊँची जातियों के 29 प्रतिशत लोगों ने भाजपा को वोट दिया और कुल मिलाकर ऊँची जातियों के 36 प्रतिशत लोगों का वोट भाजपा और उसके सहयोगी दलों को मिला। कांग्रेस को ऊँची जातियों के 26 प्रतिशत लोगों का वोट मिला और कांग्रेस व उसके

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 107

तालिका-2

विभिन्न राज्यों के सामाजिक समुदायों का मतदान (2009)

राज्य	कुल मतदान	ऊँची जातियों का मतदान
अखिल भारतीय	58.5	58
जिन राज्यों में कुल मतदान ज़्यादा था लेकिन ऊँची जातियों का मतदान उससे भी ज़्यादा था		
आंध्र प्रदेश	72.6	75
कर्नाटक	58.8	66
पंजाब	69.9	76
राज्य में कुल मतदान कम रहा लेकिन ऊँची जातियों का मत प्रतिशत उससे भी कम रहा		
छत्तीसगढ़	55.3	53
गुजरात	47.9	46
राजस्थान	48.4	47
उत्तर प्रदेश	47.8	46
जिन राज्यों में मतदान का प्रतिशत ज़्यादा रहा लेकिन ऊँची जातियों के कम वोट पड़े		
अरुणाचल प्रदेश	68.3	43
असम	69.5	61
केरल	73.4	64
ओडीशा	65.3	58
तमिलनाडु	73.0	70
राज्य में मतदान का प्रतिशत कम रहा लेकिन ऊँची जातियों के मतदान का प्रतिशत राज्य के औसत से ज़्यादा रहा		
झारखण्ड	51.0	62
मध्य प्रदेश	51.2	52
महाराष्ट्र	50.7	55
उत्तराखण्ड	53	55
दिल्ली	51.8	55
जिन राज्यों में कुल मतदान और ऊँची जातियों के मतदान का प्रतिशत लगभग समान रहा		
बिहार	44.4	44
हरियाणा	67.5	68

नोट : सभी अंक प्रतिशत में. सर्वे के लिए मतदान के प्रतिशत को सभी चुनावों के लिए हुए वास्तविक मतदान के आँकड़ों की तुलना में लिया गया है. सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश (राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2009).

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 108

सहयोगी दलों को ऊँची जातियों के 35 प्रतिशत लोगों का वोट मिला। यादव और पलशीकर ने ऊँची जातियों के हिंदुओं के मतदान की प्रवृत्ति में 2009 में आये बदलाव पर चर्चा की है और उस फ़र्क़ को भी देखा है जो 2004 के बाद आया है।

अगर हम इन पार्टियों के सहयोगी दलों को निकाल कर इनके वोट के हिस्से पर नज़र डालें तो पाएँगे कि भाजपा को कांग्रेस की तुलना में ऊँची जातियों के ज़्यादा वोट मिल रहे थे, लेकिन उनके बीच का अंतर हर चुनाव के साथ घट रहा था। स्पष्टत: भाजपा को मिलने वाले ऊँची जातियों के वोटों में कमी हो रही था। दोनों के बीच 1998 में 25 प्रतिशत का फ़र्क़ था जो 2004 में 12 प्रतिशत पर आया और 2009 में तीन प्रतिशत रह गया, जो कि भाजपा के लिए अच्छा संकेत नहीं था। कांग्रेस और भाजपा के अलावा वामपंथी दलों को भी बसपा और सपा के मुक़ाबले ऊँची जातियों के वोट अच्छी तादाद में मिल रहे थे। लेकिन हम 2014 के सी.एस.डी.एस.-आईबीएन सर्वे पर ग़ौर करें तो अनुमान है कि कांग्रेस ऊँची जातियों के आठ प्रतिशत वोट गँवा रही है और इस तबक़े में भाजपा का

तालिका- 3

1971 के बाद ऊँची जातियों में मतदान की प्रवृत्ति

लोकसभा चुनाव वर्ष	1971	1996	1998	1999	2004	2009	ट्रैकर पोल, जनवरी 2014 (आकलन विहीन डाटा सेट)
कांग्रेस	45	25	22	21	23	26	19
कांग्रेस के सहयोगी दल	–	0	1	1	8	9	2
भाजपा	14	35	47	40	35	29	47
भाजपा के सहयोगी दल	–	4	9	20	16	7	2
वामपंथी दल	11	6	6	8	7	7	4
बसपा	–	7	3	1	1	3	1
सपा	–	7	1	1	4	2	1
आम आदमी पार्टी	–	–	–	–	–	–	5
अन्य	30	16	11	8	6	17	19

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस) 1971, 1996, 1998, 1999, 2004, 2004, 2009 सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश. आँकड़े वास्तविक वोट के हिस्से से लिए गये हैं. 2004 में सपा के स्तम्भ में वोट के हिस्से का मतलब सपा+ से है और 2009 में इसका अर्थ चौथे मोर्चे से है. 2014 का अनुमान जनवरी 2014 में किये गये लोकनीति, सी.एस.डी.एस. और आईबीएन नैशनल ट्रैकर पोल पर आधारित है. ट्रैकर-2014 के लिए ऊँची जातियों के सैम्पल का आकार 3812 है. मतदान के हिस्से का अनुमान मतदाताओं द्वारा एक गोपनीय डमी बैलेट के माध्यम से प्राप्त किये गये इरादों के आधार पर किया गया है. इन अनौपचारिक आँकड़ों को सी.एस.डी.एस. की टीम ने इस आधार पर समायोजित किया है कि निर्दलीय उम्मीदवारों और छोटी पार्टियों के प्रत्याशियों को मिले मतों को कम करके दिखाया जाता है और प्रमुख पार्टियों और उनके सहयोगी दलों के बारे में बढ़ा चढ़ा कर बताया जाता है. 2014 के वोटों के हिस्से का अनुमान लगाते समय उन मतदाताओं को नहीं शामिल किया गया है जो अनिश्चित हैं और जो अपनी प्राथमिकता बताना नहीं चाहते. यह सर्वेक्षण 14 राज्यों में किया गया है.

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 109

जनाधार ज़बरदस्त तौर पर बढ़ रहा है। ऊँची जातियों के 47 प्रतिशत मतदाता भाजपा को वोट देने का मानस बना रहे हैं। बाक़ी सभी पार्टियों का ऊँची जातियों में आधार घट रहा है। आम आदमी पार्टी जो पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रही है उसे इन जातियों के पाँच प्रतिशत वोट मिलने की उम्मीद है। भाजपा ने इन समुदायों में अपना खोया हुआ आधार वापस पा लिया है और वह मौजूदा स्थिति में ऊँची जातियों में बहुत अच्छा प्रदर्शन करने वाली है।

जैसा कि आँकड़े दिखा रहे हैं उससे लगता है कि भाजपा को ऊँची जातियों का समर्थन है लेकिन अगर हम विभिन्न राज्यों में प्रमुख ऊँची जातियों की मतदान-प्रवृत्ति पर ग़ौर करें तो पाएँगे कि 2009 के लोकसभा चुनाव में कई राज्यों में एक जाति-समूह के बहुसंख्यक मतदाता एक ही पार्टी के पक्ष में झुकते हैं (तालिका-4)। यह बात उन राज्यों के बारे में ज़्यादा सही है जहाँ दो प्रमुख पार्टियाँ हैं। क्रिस्टॉफ़ जैफ्रेलॉ ने भारत के विभिन्न राज्यों में जातियों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की है। जिन राज्यों में चुनावी संदर्भ व्यापक तौर पर दो ध्रुवीय यानी कांग्रेस और भाजपा के बीच परिभाषित है, वहाँ ऊँची जातियों का वोट भाजपा के साथ जाता है। इन राज्यों में गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश प्रमुख हैं। इन राज्यों में विभिन्न ऊँची जातियों के मतदान की प्रवृत्ति एक ही तरह की है यानी भाजपा की ओर। उदाहरण के लिए मध्य प्रदेश में 53 प्रतिशत ब्राह्मणों ने, 47 प्रतिशत राजपूतों ने, 57 प्रतिशत अन्य ऊँची जातियों ने और कुल मिलाकर 52 प्रतिशत ऊँची जातियों ने भाजपा को वोट दिया।

ऊँची जातियों का यह वोट उस समय विभाजित हो जाता है जब दो से ज़्यादा पार्टियाँ मैदान में होती हैं। उदाहरण के लिए झारखण्ड, आंध्र प्रदेश और गोवा। आंध्र प्रदेश में ऊँची जातियों के रेड्डियों ने कांग्रेस को समर्थन दिया और कम्मा जातियों ने तेलुगू देशम पार्टी को समर्थन दिया। आंध्र प्रदेश कभी भी भाजपा का गढ़ नहीं रहा। 2008 में प्रजा राज्यम पार्टी जैसे नये दल के उदय के साथ कापू जातियों का समर्थन उनकी तरफ़ खिसका। ऊँची जातियों के ये वोट बहुध्रुवीय मुक़ाबले की सूरत में और भी विखण्डित हो जाते हैं। केरल, बिहार और पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में बहुध्रुवीय मुक़ाबला ही होता है। उदाहरण के लिए बिहार में दो प्रमुख दलों के अलावा जनता दल (एकीकृत) और राजद जैसी पार्टियाँ भी थीं। वहाँ ब्राह्मणों और भूमिहारों के अधिकतम वोट जनता दल (एकीकृत) और राजपूत वोट भाजपा को गये।

विभिन्न राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षणों के आँकड़े बताते हैं कि तमाम चुनावों में कांग्रेस, वामपंथी या अन्य दलों के मुक़ाबले भाजपा को चाहे ऊँची जातियों के पुरुष हों या स्त्रियाँ, सभी का ज़्यादा समर्थन हासिल है। 2009 में कांग्रेस और भाजपा को वोट देने वाले पुरुषों और स्त्रियों की संख्या लगभग बराबर थी। क़रीब 31 प्रतिशत पुरुष और स्त्रियों ने भाजपा को वोट दिया तो 27 प्रतिशत ने कांग्रेस को। कुल मिलाकर 1971 के चुनावों से अब तक की स्थितियों पर नज़र डालें तो पाएँगे कि ऊँची जातियों के पुरुष अपनी जातियों की महिलाओं के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा वोट देते रहे हैं। हालाँकि 2009 में इन दोनों तबक़ों के बीच का अंतर घटकर शून्य रह गया लेकिन 1998 में यह अंतर 8 प्रतिशत और 1999 में छह प्रतिशत था। 2004 में यह अंतर सिर्फ़ एक प्रतिशत था। जहाँ तक कांग्रेस की बात है तो उसके साथ उल्टी कहानी है। ऊँची जातियों की ज़्यादा महिलाएँ कांग्रेस को वोट देती रही हैं लेकिन 1999 के बाद से यह अंतर ख़ास नहीं रह गया। राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2004 के आँकड़ों का राजेश्वरी देशपाण्डे द्वारा विश्लेषण कहता है कि कांग्रेस के साथ हमेशा जेण्डर की बढ़त रही है जबकि भाजपा इस मामले में हमेशा घाटे में थी। लेकिन 2014 की तस्वीर बताती है कि पुरुषों और स्त्रियों दोनों में भाजपा अच्छा असर बना रही है और उम्मीद है कि दोनों में उसे अच्छे वोट मिलेंगे। आम आदमी पार्टी वामपंथी दलों, बसपा और अन्य पार्टियों के मुक़ाबले स्त्रियों और पुरुषों में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। (तालिका-5)।

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 110

तालिका-4

भारत के विभिन्न राज्यों में मतदान की प्रवृत्ति

राज्य	ऊँची जाति	कांग्रेस	भाजपा	अन्य मुख्य दल	अन्य	सैम्पल
आंध्र प्रदेश	रेड्डी	63	8	तेदेपा+-20	9	172
	कम्मा	19	4	तेदेपा+-61	16	124
	कापू	26	-	तेदेपा+-14, पीरआरपी-60	0	141
	अन्य ऊँची जातियाँ	38	12	तेदेपा+-35	15	144
	कुल (ऊँची जातियों के वोट)		6	तेदेपा+-31	25	581
असम	ब्राह्मण	28	48	अगप-17	7	46
	अन्य ऊँची जातियाँ	36	27	अगप-28	9	108
	कुल	34	33		9	154
बिहार	ब्राह्मण	19	39	जद (एकी)-30, राजद-3	9	70
	भूमिहार	6	17	जद (एकी)-30, राजद-6	41	53
	राजपूत	3	41	जद (एकी)-38, राजद-3	15	71
	अन्य ऊँची जातियाँ	8	20	जद (एकी)-28, राजद-9	35	25
	कुल	10	32	जद (एकी)-32, राजद-6	20	219
छत्तीसगढ़	कुल उच्च जाति	38	52	-	10	42
गोवा	ब्राह्मण	11	56	राकांपा-22	11	27
	अन्य ऊँची जातियाँ	30	48	राकांपा-11	11	83
	कुल	26	51	राकांपा-13	10	110
गुजरात	ब्राह्मण	19	81	-	0	41
	राजपूत	27	40	-	33	47
	पटेल	10	84	-	6	74
	अन्य ऊँची जातियाँ	28	66	-	6	58
	कुल	20	69	-	11	220
हरियाणा	ब्राह्मण	31	18	भारालो-24	27	51
	जाट	43	22	भारालो-25	10	113
	अन्य ऊँची जातियाँ	37	16	भारालो-26	21	62
	कुल	38	19	भारालो-25	18	226

हिमाचल प्रदेश	ब्राह्मण	37	63	–	0	68
	राजपूत	44	53	–	3	284
	अन्य ऊँची जातियाँ	44	56	–	0	16
	कुल	43	55	–	2	368
जम्मू और कश्मीर	ब्राह्मण	33	52	पीडीपी–3	12	54
	राजपूत	38	50	पीडीपी–5, नेकां–2	5	58
	अन्य ऊँची जातियाँ	32	40	जेकेपीडीपी–16	12	25
	कुल	35	49	नेकां–2, पीडीपी–7	7	137
झारखण्ड	कुल	21	42	जेपीएम–17	20	90
कर्नाटक	ब्राह्मण	25	65	जद (सेकु)–10	–	48
	अन्य ऊँची जातियाँ	24	53	जद (सेकु)–18	5	34
	कुल	24	60	जद (सेकु)–13	3	82
केरल	नायर	32	29	वाजमो–28	11	68
	अन्य ऊँची जातियाँ	33	17	वाजमो–46	4	24
	कुल	33	25	वाजमो–34	8	92
मध्य प्रदेश	ब्राह्मण	31	53	सपा–7	9	90
	राजपूत	45	47	सपा–1	7	98
	अन्य ऊँची जातियाँ	29	57	सपा–0	14	49
	कुल	36	52	सपा–3	9	237
महाराष्ट्र	मराठा	14	18	राकांपा–26, शिव सेना–14	15	439
	अन्य ऊँची जातियाँ	22	28	राकांपा–16, शिव सेना–14	20	129
	कुल	16	20	राकांपा–23, शिव सेना–24	17	568
ओडीशा	ब्राह्मण	31	20	बीजद–42	7	82
	कायस्थ	30	12	बीजद–23	35	40
	अन्य ऊँची जातियाँ	20	11	बीजद–27	42	157
	कुल	24	14	बीजद–31	31	279
पंजाब	ब्राह्मण	52	24	शिअद–17	7	42
	अन्य ऊँची जातियाँ	60	19	शिअद–18	3	57
	कुल	58	21	शिअद–16	5	97

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 112

राजस्थान	राजपूत	29	63	बसपा-3	5	79
	अन्य ऊँची जातियाँ	36	55	बसपा-2	7	106
	कुल	33	59	बसपा-2	6	185
तमिलनाडु	कुल	11	4	द्रमुक-31, अन्ना द्रमुक-28	26	160
त्रिपुरा	कुल	26	5	वाम दल-64	5	141
उत्तर प्रदेश	ब्राह्मण	30	43	बसपा-8	19	176
	राजपूत	20	45	बसपा-8	27	126
	अन्य ऊँची जातियाँ	20	34	बसपा-25	21	136
	कुल	24	41	बसपा-13	22	438
उत्तराखण्ड	ब्राह्मण	39	47	बसपा-6	8	97
	राजपूत	42	41	बसपा-8	9	194
	अन्य ऊँची जातियाँ	30	48	बसपा-20	2	46
	कुल	40	44	बसपा-9	7	337
पश्चिम बंग	ब्राह्मण	3	14	तृण मूल-36	2	78
	कायस्थ	2	9	तृण मूल-53, वाम-36	0	173
	अन्य ऊँची जातियाँ	7	5	तृण मूल-49, वाम-39	0	131
	कुल	4	9	तृण मूल-48, वार्म-39	0	382

नोट : एक स्तम्भ को छोड़ कर और सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं और 100 के भीतर हैं. इस तालिका में कुछ राज्यों को इसलिए नहीं लिया गया है क्योंकि वहाँ ऊँची जातियों की आबादी कम है. इस तालिका में विभिन्न राज्यों में ऊँची जातियों की महत्त्वपूर्ण उप-जातियों को दर्शाया गया है. कुछ राज्यों में उपजातियों की संख्या बहुत कम है और उसी तरह से हमारे सैम्पल का साइज़ भी. इसलिए सभी उप-जातियों को ऊँची जातियों की एक श्रेणी में रख दिया गया है। राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2009, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

तालिका-6 दर्शाती है कि कांग्रेस और भाजपा दोनों को अन्य वर्गों के मुक़ाबले सम्पन्न ऊँची जातियों से ज़्यादा समर्थन मिला। वामपंथियों को ग़रीब ऊँची जातियों से ज़्यादा समर्थन मिला। सम्पन्न ऊँची जातियों ने कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा वोट दिया। कांग्रेस और भाजपा को ग़रीब ऊँची जातियों से सबसे कम समर्थन मिला। लेकिन उनमें भी कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा समर्थन मिला। ट्रैकर पोल के आँकड़े बताते हैं कि 2009 के बाद सभी वर्गों में भाजपा का समर्थन बढ़ा है और कांग्रेस, वाम और बसपा का समर्थन घट रहा है। इन वर्गों में आप वाम और बसपा से अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

2009 के चुनावों में ऊँची जातियों के लोगों गाँव और शहरी दोनों इलाक़ों में कांग्रेस को बराबर वोट दिया। 2009 के चुनावों में ऊँची जातियों के शहरी और ग्रामीण दोनों तरह के मतदाताओं ने भाजपा को कांग्रेस और अन्य दलों के मुक़ाबले ज़्यादा बड़ी संख्या में वोट दिया (देखें तालिका-7)।

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 113

तालिका-5

विभिन्न दलों के लिंगवार मत प्रतिशत

	कांग्रेस							भाजपा						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
पुरुष	19	27	22	21	19	25	42	50	31	35	43	51	36	14
स्त्री	20	27	23	22	26	25	49	44	31	34	37	43	33	14
	वाम दल							**बसपा**						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
पुरुष	4	8	5	8	6	6	12	1	4	1	1	3	7	–
स्त्री	4	7	9	9	6	6	11	1	3	1	0	3	7	–

	आप	अन्य पार्टियाँ						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	1971
पुरुष	5	21	28	38	27	22	25	33
स्त्री	5	26	30	32	33	22	29	26

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-1971, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009, ट्रैकर पोल-2014. सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

कांग्रेस के विपरीत भाजपा के लिए शहरी और ग्रामीण मतदाताओं के झुकाव में अंतर देखा गया। 2009 के चुनावों में गाँवों की ऊँची जातियों के मतदाताओं ने भाजपा को शहरी मतदाताओं के मुक़ाबले ज़्यादा बड़ी तादाद में वोट दिये। जबकि वामपंथी दलों और बसपा को गाँव और शहरी इलाक़ों में बराबर के मत पड़े। इसलिए 2009 के चुनावों में एक फ़र्क़ जो था वह भाजपा के लिए था जिसे शहर के मुक़ाबले गाँव के मतदाताओं ने ज़्यादा वोट दिये। जब 2004 के चुनाव से तुलना करें तो शहरों में शहरी ऊँची जातियों के वोटों के लिहाज़ से भाजपा को 2009 में भारी नुक़सान हुआ। 2004 के मुक़ाबले शहरी इलाक़ों में भाजपा के मत प्रतिशत में 15 प्रतिशत का भारी ह्रास हुआ। लेकिन 2014 का ट्रैकर डाटा बिल्कुल अलग तस्वीर पेश करता है। 2009 तक कांग्रेस के वोट हर चुनाव में गाँव और शहर दोनों में बढ़ रहे थे, लेकिन अगर हम 2014 के आँकड़ों पर ग़ौर करें तो पाएँगे कि इसके वोटों का हिस्सा बुरी तरह गिरा है। हालाँकि भाजपा की तरफ़ ऊँची जातियों के मतदाता तेज़ी से झुक रहे हैं लेकिन आप को भी शहरी ऊँची जातियों में समर्थन मिल रहा है और उसे 11 प्रतिशत लोग समर्थन दे रहे हैं।

तालिका-8 यह बताती है कि विभिन्न शैक्षणिक स्तर वाले उच्च जातियों के मतदाताओं में मतदान की प्रवृत्ति क्या है। उच्च शिक्षा वाले लोगों में भाजपा की लोकप्रियता हमेशा रही है। दूसरी तरफ़ कांग्रेस ऊँची जातियों के उन लोगों में लोकप्रिय है जो कम पढ़े लिखे हैं। 2009 में भी शैक्षणिक लिहाज़ से भी कांग्रेस के लिए वोट देने का कोई रुझान नहीं देखा गया। लेकिन उस साल भी भाजपा के लिए स्पष्ट तौर पर झुकाव था, जैसे जैसे ज़्यादा शिक्षित लोगों के पास जाते हैं भाजपा को वोट देने

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 114

तालिका-6 : ऊँची जातियों के आर्थिक वर्ग के पार्टियों के लिए वोट

	कांग्रेस		भाजपा		वामपंथ		बसपा		आप
	2014	2009	2014	2009	2014	2009	2014	2009	2014
गरीब	21	23	42	29	4	11	3	4	7
निम्न	17	27	45	30	5	8	2	4	3
मध्य	20	28	49	32	3	7	1	2	5
अमीर	18	32	52	38	4	2	1	4	6

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं. बाक़ी प्रतिशत उन लोगों का है जो दूसरे दलों को वोट देते हैं. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009, ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

की प्रवृत्ति बढ़ती नज़र आती है। हाल का परिदृश्य बताता है कि भाजपा सभी श्रेणियों और सभी शैक्षणिक वर्ग में अपने मतों का प्रतिशत कम से कम 10 प्रतिशत और अधिकतम 19 प्रतिशत तक बढ़ाएगी।

2009 के चुनावों में युवा मतदाताओं की बहुत चर्चा हुई थी। अगर उम्र के आधार पर ऊँची जातियों के मतदाताओं का रुझान देखें तो वरिष्ठ लोगों का कांग्रेस के प्रति भारी समर्थन था जबकि युवाओं में भाजपा को। ऊँची जातियों के युवा कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा के पक्ष में थे। 2014 के ट्रैकर डाटा पर ग़ौर करने से कांग्रेस के मतों का प्रतिशत सभी आयु वर्ग के लोगों में घटता और भाजपा

तालिका-7 : वोटों की इलाक़ेवार प्रवृत्ति

	कांग्रेस							भाजपा/जनसंघ						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
ग्रामीण	18	27	22	21	22	27	49	46	33	32	37	45	30	13
शहरी	20	27	23	22	23	22	38	51	28	43	50	50	44	16

	वामपंथी दल							बसपा						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
ग्रामीण	5	8	5	10	6	8	12	2	3	1	1	3	9	लागू नहीं
शहरी	2	8	12	5	6	4	11	1	3	1	1	3	4	लागू नहीं

	आप	अन्य						
	2014	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
ग्रामीण	2	27	29	40	32	24	27	27
शहरी	11	15	34	22	23	19	27	36

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं. बाक़ी प्रतिशत उन लोगों का है जो दूसरे दलों को वोट देते हैं. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009, ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 115

के लिए बढ़ता नज़र आता है। हाल में बनी आप को ज़्यादा समर्थन युवा वर्ग से मिल रहा है। हमने यह पता करने की कोशिश की कि ऊँची जातियों के पहली बार के मतदाता किस पार्टी को वोट देना चाहते हैं। हमने पाया कि उनमें से बहुमत मजबूती से भाजपा के साथ जाएगा। उसके बाद कांग्रेस का नम्बर है। कांग्रेस और भाजपा के मतों में काफ़ी अंतर है। युवाओं में भाजपा की लोकप्रियता बढ़ रही है। (तालिका-10)

यह शोध-पत्र स्पष्ट तौर पर बताता है कि भाजपा एक ऐसी केंद्रीय शक्ति के तौर पर उभर रही है जिसके इर्द गिर्द 2014 के आम चुनावों में ऊँची जातियाँ मतदान करना चाहती है। ऊँची जातियों

तालिका-8 : शैक्षणिक आधार पर विभिन्न दलों के मतों का हिस्सा

	कांग्रेस							भाजपा / जनसंघ						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
अशिक्षित	19	29	24	24	31	23	56	38	28	32	33	37	30	11
प्राथ.शिक्षा	24	25	25	21	28	24	43	38	27	30	37	39	29	16
मैट्रिक तक	19	27	22	19	20	28	38	50	31	33	45	43	36	15
उच्च शिक्षा	16	27	21	19	18	23	26	55	36	43	48	57	47	7

	वामपंथी दल							बसपा						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
अशिक्षित	4	6	3	5	5	5	8	1	3	1	1	4	15	लागू नहीं
प्राथ.शिक्षा	6	11	10	11	5	8	12	2	3	1	1	4	8	लागू नहीं
मैट्रिक तक	3	9	8	9	12	7	14	2	4	1	0	3	2	लागू नहीं
उच्च शिक्षा	3	5	6	8	2	5	19	1	3	0	0	2	2	लागू नहीं

	आप	अन्य						
	2014	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
अशिक्षित	2	36	34	40	37	23	27	26
प्राथ.शिक्षा	1	29	34	34	30	23	32	29
मैट्रिक तक	4	18	29	37	27	22	26	33
उच्च शिक्षा	8	17	29	30	25	21	23	49

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं. बाक़ी प्रतिशत उन लोगों का है जो दूसरे दलों को वोट देते हैं. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009, ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

के मतदाताओं का स्पष्ट बहुमत लेकर पार्टी साफ़ तौर पर अपना रास्ता बना रही है। यह बदलाव (2009 से तुलना करने पर) शहरी इलाक़ों और शिक्षित वर्ग की तरफ़ से ज़्यादा प्रतीत हो रहा है (तालिका-11)। पूरी तस्वीर देखने पर पता चलता है कि 2009 के मुक़ाबले भाजपा के लिए ऊँची जातियों के वोटों में 20 प्रतिशत का उछाल आ रहा है। दूसरी तरफ़ ऊँची जातियों के वोटों पर कांग्रेस की पकड़ साफ़ तौर पर कमज़ोर हो रही है।

इस लेख का उद्देश्य ऊँची जातियों के वोटों की चुनावी हिस्सेदारी और मतदान की प्राथमिकता में आने वाले बदलाव और उसकी प्रकृति दिखाने के लिए तैयार किया गया है। जहाँ तक किसी एक पार्टी की प्राथमिकता की बात है तो हम पाते हैं कि ऊँची जातियों के मतदाता 1998 के बाद से कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा वरीयता दे रहे हैं। हालाँकि भाजपा का ऊँची जातियों, उच्च

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 116

तालिका-9 : उम्र के लिहाज़ से विभिन्न दलों के मतों का हिस्सा

	कांग्रेस							भाजपा / जनसंघ						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
25 वर्ष तक के	14	26	23	17	20	24	51	49	33	37	45	47	36	12
26-35 वर्ष	18	26	22	20	23	24	42	49	32	33	41	50	34	16
36-45 वर्ष	19	26	23	21	24	24	46	50	30	33	39	43	34	12
46-55 वर्ष	20	26	20	28	17	26	49	46	32	37	33	49	36	15
56 और ऊपर	23	30	24	20	28	29	39	41	29	34	42	46	33	13

	वामपंथी दल							बसपा						
	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971	2014	2009	2004	1999	1998	1996	1971
25 वर्ष तक	3	8	5	7	8	5	19	3	3	1	1	2	20	-
26-35 वर्ष	4	7	7	8	5	7	11	1	4	1	1	1	8	-
36-45 वर्ष	4	7	7	10	5	7	7	1	3	1	0	3	7	-
46-55 वर्ष	4	9	8	10	7	5	6	2	3	1	0	5	5	-
56 व उससे ऊपर	5	8	8	6	4	6	17	1	3	0	0	3	5	-

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं. बाक़ी प्रतिशत उन लोगों का है जो दूसरे दलों को वोट देते हैं. राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009, ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

वर्ग, शिक्षित मतदाता और शहरी इलाक़े के पुरुषों में ज़्यादा वोट मिल रहे थे लेकिन कांग्रेस के साथ यह अंतर हर चुनाव के साथ कम हो रहा था। यह ह्रास गाँव-शहर के अंतर में, हर आयु वर्ग में और जेंडर के साथ भी दिखाई पड़ रहा था। हर चुनाव के साथ ऊँची जातियों में भाजपा का सामाजिक आधार घट रहा था। लेकिन अगर ट्रैकर पोल के आँकड़ों पर यक़ीन किया जाए तो भाजपा ऊँची जातियों में अपना सामाजिक आधार बढ़ा रही है। इस पार्टी का इन समूहों में मत-प्रतिशत बढ़ रहा है। वास्तविक आँकड़े तो लोकसभा चुनाव के बाद पता चलेंगे लेकिन अगर यह प्रवृत्ति बनी रही तो यही ऊँची जातियाँ अगले लोकसभा की स्वरूप तय करने में अहम कारक बनेगी और यह भी निर्धारित करेगी कि किस पार्टी को कितनी सीटें मिलती हैं। एक और महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति आप के रूप में दिखाई पड़ रही है जो कि इस वर्ग में अपना आधार बना रही है और बसपा, सपा व कुछ अन्य दलों के मुक़ाबले बहुत अच्छा कर रही है।

तालिका-10 : ऊँची जातियों के पहली बार के मतदाता जो भाजपा को समर्थन देते हैं

	कांग्रेस	भाजपा	वामपंथी	बसपा	आप	अन्य
पहली बार के ऊँची जाति के मतदाता (18-22 साल,) एन-174	14	48	2	5	7	24

नोट : सारे आँकड़े प्रतिशत में. **स्रोत :** ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

तालिका-11 : ऊँची जातियों मतदाताओं के बीच भाजपा काफ़ी बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपने वोटों को बढ़ा रही है

	कांग्रेस			भाजपा		
	ट्रैकर-14	एनईएस-2009	लाभ/हानि	ट्रैकर-14	एनईएस-2009	लाभ/हानि
योग	19	26	-7	47	29	+18
पुरुष	19	27	-8	50	31	+19
स्त्री	20	27	-7	44	31	+13
ग़रीब	21	23	-2	42	29	+13
अमीर	18	32	-14	52	38	+14
ग्रामीण	18	27	-9	46	33	+13
शहरी	20	27	-7	51	28	+23
निरक्षर	19	29	-10	38	28	+10
स्नातक और उससे आगे	16	27	-11	55	36	+19
25 साल की उम्र तक	14	26	-12	49	33	+16
56 साल और उससे अधिक	23	30	-7	41	29	+12

नोट : सारे आँकड़े प्रतिशत में. **स्रोत :** राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2009, ट्रैकर पोल-2014, सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

संदर्भ

क्रिस्टॉफ़ जैफ्रेलॉ (2012), 'द कास्ट बेस्ड मोज़ाइक ऑफ़ इण्डियन पॉलिटिक्स', *सेमिनार* (633), http://www.india.seminar. com/2012/633/633_christophe_jaffrelot.htm,17 फ़रवरी, 2014 को देखा गया.

योगेंद्र यादव और सुहास पलशीकर (2009), 'बिटवीन फ़ोर्च्यून ऐंड वर्चू : एक्सप्लेनिंग कांग्रेसेज़ एंबीगुअस विक्ट्री इन 2009', *इकॉनॉमिक ऐंड पॅलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

राजेश्वरी देशपाण्डे (2004), 'हाउ जेंडर्ड वाज़ वुमंस पार्टिसिपेशन इन इलेक्शन 2004', *इकॉनॉमिक ऐंड पॅलिटिकल वीकली,* खण्ड 39, अंक 51.

संजय कुमार (2004), 'पैंटर्न्स ऑफ़ पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन : ट्रेंड्स ऐंड पर्सपेक्टिव', *इकॉनॉमिक ऐंड पॅलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

09_vibha_nitin_Layout 1 5/1/2014 5:19 PM Page 118